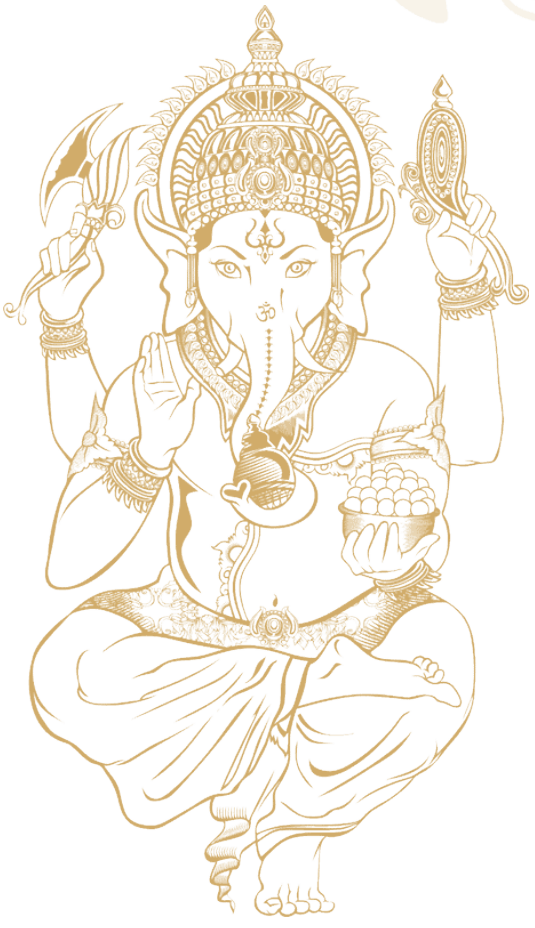

Arpit gwalior

Ms.

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121562203

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
25/06/1992	जन्म तिथि	12/03/2026
गुरुवार	दिन	गुरुवार
घंटे 15:15:00	जन्म समय	16:43:00 घंटे
घटी 24:30:19	जन्म समय(घटी)	25:31:33 घटी
India	देश	India
Gwalior	स्थान	Delhi
26:12:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
78:09:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:17:24	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:26:52	सूर्योदय	06:34:45
19:13:09	सूर्यास्त	18:27:31
23:45:24	चित्रपक्षीय अयनांश	24:13:29

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 4वर्ष 9मा 8दि		18:57:05	तुला	लग्न	सिंह	05:39:20	केतु 2वर्ष 1मा 8दि	
चन्द्र		10:19:04	मिथु	सूर्य	कुंभ	27:39:31	केतु	
04/04/2023		04:14:23	मेष	चंद्र	धनु	09:19:15	12/03/2026	
04/04/2033		14:06:35	मेष	मंगल	कुंभ	13:33:11	20/04/2028	
चन्द्र	03/02/2024	03:42:02	कर्क	बुध व	कुंभ	17:50:32		00/00/0000
मंगल	03/09/2024	15:09:12	सिंह	गुरु	मिथु	20:51:55		00/00/0000
राहु	05/03/2026	13:31:56	मिथु	शुक्र	मीन	13:15:26		00/00/0000
गुरु	05/07/2027	24:07:09	मक व	शनि	मीन	08:53:30		00/00/0000
शनि	02/02/2029	06:54:52	धनु	राहु	कुंभ	14:39:54		00/00/0000
बुध	04/07/2030	06:54:52	मिथु	केतु	सिंह	14:39:54		12/03/2026
केतु	02/02/2031	22:46:30	धनु व	हर्ष	वृष	03:48:26	गुरु	15/03/2026
शुक्र	03/10/2032	24:11:36	धनु व	नेप	मीन	07:14:28	शनि	23/04/2027
सूर्य	04/04/2033	26:43:35	तुला व	प्लूटो	मक	10:35:59	बुध	20/04/2028

लग्न-चलित

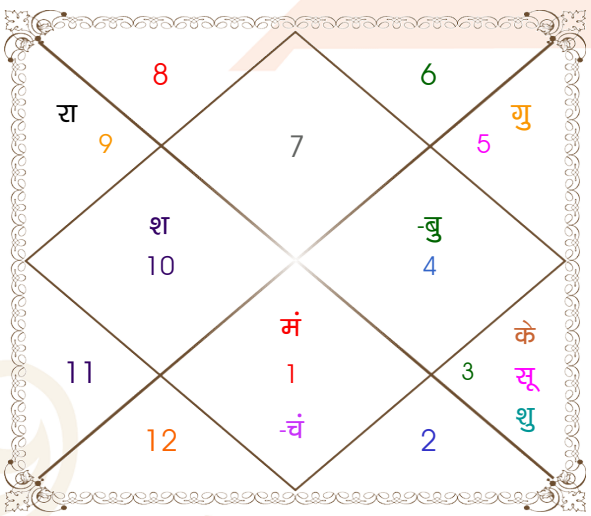

लग्न-चलित

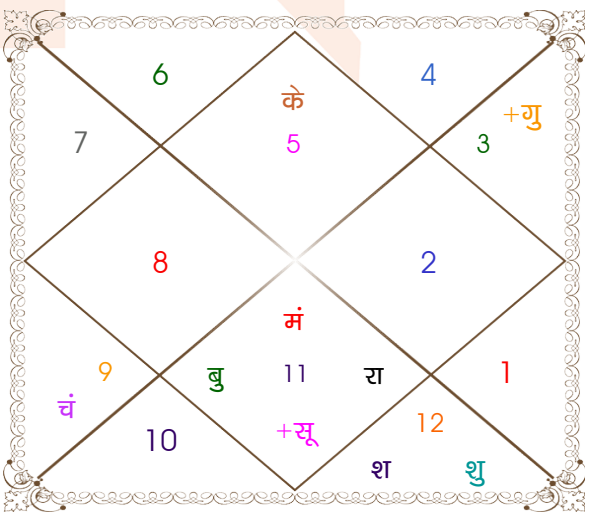

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	अश्व	श्वान	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	धनु	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	13.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

।तचपज हूंसपवत का वर्ग सिंह है तथा Ms. का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ।तचपज हूंसपवत और Ms. का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

।तचपज हूंसपवत मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल ।तचपज हूंसपवत कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल ।तचपज हूंसपवत कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र ।तचपज हूंसपवत कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि ।तचपज हूंसपवत कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Ms. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Ms. कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Ms. कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों

में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ।तचपज हूंसपवत कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

।तचपज हूंसपवत तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।